वर्ष 16 अंक 314 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शुक्रवार 18 नवम्बर 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

किसानों को निःशुल्क वितरित किए गए डी कंपोजर

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आज जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष योजना अंतर्गत डी कंपोजर किसानों को वितरण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पर्यावरण में कार्बन ऑक्साइड,कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे हानिकारक पदार्थ घुलकर पशुओं एवं मनुष्यो में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। कृषि वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि फसल अवशेषों को खेत में ही डी कंपोजर की सहायता से गलाए तथा 25 लीटर पानी में 1 किलो ग्राम गुड़ को मिलाकर फिर उसमें 100 मिलीलीटर डी कंपोजर मिश्रित कर 200 लीटर पानी में घोलकर पराली पर स्प्रे की सहायता से छिड़काव करते हैं। जिससे यह 10 से 12 दिन में सड़ गल करके खाद का रूप बन जाती है जो मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। कार्यक्रम में डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि नत्रजन, फास्फोरस, सल्फर पोषक तत्व फसल अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं उन्होंने कहा कि यदि धान के पुआल को सड़ाते एवं गलाते हैं तो अगली फसल की शुरुआती अवस्था में लगभग 40प्रतिशत नाइट्रोजन, 30 से 35प्रतिशत फास्फोरस, 80 से 85प्रतिशत पोटाश एवं 40 से 45 प्रतिशत सल्फर की पूर्ति हो जाती है। इस अवसर पर किसानों ने फसल अवशेष न जलाने का संकल्प भी लिया। किसानों का पंजीकरण गौरव शुक्ला ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व शिक्षक संतोष बाजपेई ने की। उन्होंने किसानों से कहा कि डी कंपोजर का प्रयोग अवश्य करें। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान मनमीत, आशीष पाल, पुत्तन लाल एवं खुशी लाल सहित 100 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

Email :thegramtodayeditor@gmail.com R.N.I No. UTTHIN/2018/76731

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नज़र)

दि ग्राम टुडे

र प्रदेश,. राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, संघ प्रदेश एवम बुंदेलखंड से एक साथ प्रसारित

शुक्रवार, 18 नवम्बर, 2022 कुल पेज : 08 मूल्य प्रति 2/- रूपया

जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु निशुल्क किसानों को वितरित किए गए डी कंपोजर

दि ग्राम टुडे, संवाददाता।

कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आज जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष योजना अंतर्गत डी कंपोजर किसानों को वितरण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पर्यावरण में कार्बन ऑक्साइड,कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे हानिकारक पदार्थ घुलकर पशुओं एवं मनुष्यो में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। कृषि वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि फसल अवशेषों को खेत में ही डी कंपोजर की सहायता से गलाए तथा 25 लीटर पानी में 1 किलो ग्राम गुड़ को मिलाकर फिर उसमें 100 मिलीलीटर डी कंपोजर मिश्रित कर 200 लीटर पानी में घोलकर पराली पर स्प्रे की सहायता से छिड़काव करते हैं। जिससे यह 10 से 12 दिन में सड़ गल करके खाद का रूप बन जाती है जो मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। कार्यक्रम में डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि नत्रजन, फास्फोरस, सल्फर पोषक तत्व फसल अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं उन्होंने कहा कि यदि धान के पुआल को सड़ाते एवं गलाते हैं तो अगली फसल की शुरुआती अवस्था में लगभग 40: नाइट्रोजन, 30 से 35: फास्फोरस, 80 से 85: पोटाश एवं 40 से 45: सल्फर की पूर्ति हो जाती है। इस अवसर पर किसानों ने फसल अवशेष न जलाने का संकल्प भी लिया। कुछ किसानों का पंजीकरण गौरव शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान मनमीत, आशीष पाल, पुत्तन लाल एवं खुशी लाल सहित 100 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:269 | देहरादून, गुरुवार, 17 नवंबर, 2022 | पृष्ठ:08

फसल अवशेष प्रबंधन को किसानों निशुल्क वितरित किए गए डी कंपोजर

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आज जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष योजना अंतर्गत डी कंपोजर किसानों को वितरण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी उन्होंने बताया कि पर्यावरण में कार्बन ऑक्साइड,कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे हानिकारक पदार्थ घुलकर पशुओं एवं मनुष्यो में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न करते हैं कृषि वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि फसल अवशेषों को खेत में ही डी कंपोजर की सहायता से गलाए तथा 25 लीटर पानी में 1 किलो ग्राम गुड़ को मिलाकर फिर उसमें 100 मिलीलीटर डी कंपोजर मिश्रित कर 200 लीटर पानी में घोलकर पराली पर स्प्रे की सहायता से छिड़काव करते हैं। जिससे यह 10 से 12 दिन में सड़ गल करके खाद का रूप बन जाती है जो मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। कार्यक्रम में डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि नत्रजन, फास्फोरस, सल्फर पोषक तत्व फसल अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं उन्होंने कहा कि यदि धान के पुआल को सड़ाते एवं गलाते हैं तो अगली फसल की शुरुआती अवस्था में लगभग 40% नाइट्रोजन, 30 से 35% फास्फोरस, 80 से 85% पोटाश एवं 40 से 45% सल्फर की पूर्ति हो जाती है। इस अवसर पर किसानों ने फसल अवशेष न जलाने का संकल्प भी लिया कुछ किसानों का पंजीकरण गौरव शुक्ला ने किया कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान मनमीत, आशीष पाल, पुत्तन लाल एवं खुशी लाल सहित 100 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

गुरुवार 17 नवंबर 2022 | अंक - 303

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY

जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष प्रबंधन हेतु

किसानों को निःशुल्क वितरित किए गए डी कंपोजर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आज जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में फसल अवशेष प्रबंधन अंतर्गत डी कंपोजर किसानों को वितरण किया गया।

इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डा.खलीक खान ने किसानों को फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पर्यावरण में कार्बन ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसे हानिकारक पदार्थ घुलकर पशुओं एवं मनुष्यों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। कृषि वैज्ञानिक डा. विनीत प्रकाश ने बताया कि फसल अवशेषों को खेत में ही डी कंपोजर की सहायता से गलाए, तथा 25 लीटर पानी में 1 किलो ग्राम गुड़ को

मिलाकर फिर उसमें 100 मिलीलीटर डी कंपोजर मिश्रित कर 200 लीटर पानी में घोलकर पराली पर सही की सहायता से छिड़काव करते हैं। जिससे यह 10 से 12 दिन में सड़ गल करके खाद का रूप धन जाती है जो मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। कार्यक्रम में डा.अरुण कुमार सिंह ने बताया कि नत्रजन, फास्फोरस, सल्फर पोषक तत्व फसल अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं उन्होंने कहा कि यदि खान के पुआल को सड़ाते एवं गलाते हैं तो अगली फसल की शुरुआती अवस्था में लगभग 40 प्रतिशत नाइट्रोजन, 30 से 35 प्रतिशत फास्फोरस, 80 से 85 प्रतिशत पोटाश एवं 40 से 45 प्रतिशत सल्फर की पूर्ति हो जाती है। इस अवसर पर किसानों ने फसल अवशेष न जलाने का संकल्प भी लिया। कुछ किसानों का पंजीकरण गौरव शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान मनमीत, आशीष पाल, पुनन लाल एवं खुशी लाल सहित 100 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।